International Journal of Academic Research
ISSN: 2348-7666 Vol.2, Issue-1(1), January-March, 2015

प्रेम और सौंदर्य के कवि आचार्य पी. आदेश्वर राव

डॉ. नक्का वेंकटरमण

हिन्दी विभागाध्यक्ष, एस.के.बि.आर. महाविद्यालय
अमलापुरम, पूरबगोदावरी जिला, आँध्रप्रदेश ।
Cell : 98493 73773, E-mail : hindiramana@gmail.com

* * *

मैंने आँध्र विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग से (सं 1992 - 94) स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की है। आचार्य पी. आदेश्वरराव जी मेरे अध्यापक रहे। उनकी अध्यापन-कला और कवि-पांडित्य से मैं प्रभावित रहा। मैं ने ''हिन्दी साहित्य को आँध्रों की देन'' को एम.ए. हिन्दी द्वितीय वर्ष में विशेष अध्ययन के रूप में चुन लिया। इसी कारण से मुझे दक्षिण के, विशेषकर आँध्र के हिन्दी काव्यकारों की सृजनात्मक उपलब्धियों से परिचित होने का सौभाग्य मिला। मेरा यह स्पष्ट विचार है कि आँध्र के इन काव्यकारों की उपलब्धियाँ निश्चय ही राष्ट्रीय महत्व की हैं और इनकी गणना किये बिना हिन्दी साहित्य का इतिहास अधूरा होगा।

मैं अमलापुरम के एस के बी.आर. महाविद्यालय में हिन्दी प्राध्यापक हूँ। सं. 2005 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) की फेकल्टी इम्प्रूवमेन्ट प्रोग्राम (FIP) दसवीं परियोजना के अंतर्गत मुझे आँध्र विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में पीएच.डी उपाधि हेतु अनुसंधान करने की अनुमति दी गई है। यहाँ के मेरे गुरूवर आचार्य पद्मश्री वाई. लक्ष्मी प्रसाद जी और आचार्य एस. ए. सूर्यनारायण वर्मा जी के सुझाव के अनुसार आँध्र विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के पूर्व अध्यक्ष, परम आदरणीय गुरूवर पद्मभूषण आचार्य वार्लगड्डा लक्ष्मी प्रसाद जी के मार्ग निर्देशन में मेरे गुरूओं के गुरू ''आचार्य पी आदेश्वर राव जी की कविताओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन'' को मैं ने अपने शोध-विषय के रूप में स्वीकार किया। आचार्य पी. आदेश्वर राव जी समकालीन हिन्दी काव्य-साहित्य के अत्यंत श्रेष्ठ रचनाकार हैं अपनी कविताओं के द्वारा उन्हें बडी ख्याति प्राप्त हुई है। इस तरह के लोकप्रिय एवं प्रभावशाली कवि की रचनाओं को चुनकर मैं ने अपना शोधकार्य संपन्न किया। स्पष्टरूप से मैं समझता हूँ कि यह मेरे पूर्व जन्म का फल है ।

हमारे परम आदरणीय गुरूवर आचार्य पी.आदेश्वर राव जी की आरंभिक रचनाएँ जो मुक्तक तथा समय-समय पर लिखे गये लेखों के रूप में विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई थी। अपने जीवन के आरंभिक चरणों में ही आदेश्वर राव जी ने लेखन-कार्य का श्रीगणेश किया। साहित्य-सृजन की प्रेरणा, विशेष रूप से, आपको बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में अध्ययन करते समय अनेक साहित्यक प्रेमियों से प्राप्त हुई। गुरूजी की आरंभिक कविताओं में छायावादी व्यक्ति-चेतना, भावुकता, प्रेम, वेदना और दार्शनिकता व्यंजित हुई हैं । सन् 1958 से सन 1964 के बीच लिखीगई कविताएँ 'अंतराल' शीर्षक संकलन के रूप में प्रकाशित हुई । तदनंतर 'धार के आर-पार' और 'वातायन ये प्रेम सौध के' इन तीन मौलिक काव्य संकलनों को प्रकाशित कर उन्होंने समकालीन हिन्दी काव्य क्षेत्र में अनुपम ख्याति अर्जित की है। मेरी इच्छा के अनुसार गुरूजी की प्रेम और सौंदर्यपरक कविताओं को याद दिलाने का प्रयास करता हूँ।

आचार्य आदेश्वर राव जी की 'अप्सरी' शीर्षक कविता में एक आदर्श सौंदर्यमयी कोमल नारी की कल्पना की गई है। कवि उस अलौकिक सौंदर्य से युक्त नारी के मधुर, कोमल तथा सकारात्मक व्यक्तित्व का चित्रण इन पंक्तियों में करते हैं।

''स्वर्गलोक की चंचल अप्सरि!
आयी क्यों तू अवनी पर?
अपनी अतुलित रूप-माधुरी
बाँट रही, जग सुरभित कर ।

पावनता से हो परिवेष्टित
तू लगती कितनी सुंदर
स्वर्णिम पथ पर नवनीत चरण
रखती क्यों मंथर-मंथर?

लहराता है तेरा अंचल,
मलयानिल के परसों से

मधुप वृन्द भी त्याग सुमन-दल,
घेर रहा मधु-कलशों से।

तेरी कोमल तन का सौरभ,
फैल रहा है चारों ओर
तेरी छवि पर होकर मोहित,
हुआ यहाँ में भाव-विभोर।

कविमानस की स्वप्रिल सुंदरि !
तनिक दिखा दे वदन ललाम
अखिल विश्व को भूल-भूल कर,
देख रहा में तुझे सकाम ।

निज चितवन के मृदु स्पेशों से,
भर दे उर में प्रेमोल्लास
कोमल करतल बाहों में दे,
कर मूझ से तू हास-विलास।''

उपर्युक्त कविता लिखते समय मधुमय प्रभात की वेला में यह कवि उपवन में उदास बैठे हुए थे। प्रफुल्ल प्रसूनों के सौख्यभार से लदकर वासन्ती-समीर बह रहा था जिस के बीच एक सौंदर्याच्छदित अस्फुट मूर्ति अवतीर्ण हुई थी। उस के सौंदर्य पर मुग्ध होकर कवि यह कवि यों कहने लगा।

इस कविता में कवि की प्रेम भावना गहन रूप से उभरती है कवि ने निस्वार्थ एवं पवित्र प्रेम की सुंदर अभिव्यक्ति की है । कवि आदेश्वर राव जी की दृष्टि से जीवन का परम सत्य प्रेम ही है। विरह जन्य पीडा को भूलने तथा उस से छुटकारा प्राप्त करने के लिए उनको अपनी प्रेयसी का सहारा चाहिए। आदेश्वर राव जी ने अपनी कविताओं में प्रथम पुरूष ''मैं'' का प्रयोग करते हुए श्रृंगार का संयोग एवं वियोग दोनों पक्षों का वर्णन विस्तार से किया है। ''पंख लगा दो प्राणों मैं'' वे लिखते हैं -

''पंख लगा दो प्राणों में
उड़ जाऊँ मैं मुक्त गगन में
लेकर तुझ को बाहों में ।
भय से मत हो जाओ कम्पित
नय से मत हो जाओ पुलकित
मुझ से मत हो जाओ शंकित
निचरोंगे मेघों के वन में ।
पंख लगा दो बाहों में
उड जाऊँ में नील गगन में
लेकर तुझ को प्राणों में ।
स्वर्गंगा की अमिय-धार में
स्वर्ण-तरी पर सो जायेंगे ।
नन्दन-वन के कुसुम-कुंज में
परवश होकर खो जायेंगे ।
पंख लगा दो भावों में
उड़ जाऊँ मैं गीत-गगन में
लेकर तुझ को अन्तर में ।
गीतों में तो शब्द हमारे
पर हैं अंकित चित्र तुम्हारे
उन में अंकित मेरा कल्पन
जडे हुए, पर हाव तुम्हारे ।''

कवि अपने बाहों में, भावों में, प्राणों में पंख लगाकर नंदन-वन के कुसुम-कुंज में परवश होकर खो जाते, गीत-गगन में उड जाते तथा मेघों को वन में विचरने की मधुर कल्पना करते हैं । अपने गीतों में प्रणयिनी के चित्र अंकित करने की कामना को कवि व्यक्त करते हैं । अपनी कविता में कल्पना जनित प्रणय भावनाओं को अभिव्यक्ति देनेवाले कवि को प्रकृति में नारी-छावियाँ ही अधिक दृष्टिगोचर होती हैं । इन पंक्तियों में कवि अपने प्रत्यक्ष व्यक्तित्व को अभिव्यक्ति देते हैं । अबोध कल्पना और असीम भावुकता आदेश्वर राव जी की कविताओं के मुख्य विषय हैं । आदेश्वर राव जी ने अपनी कविताओं में वैयक्तिक भावधारा और अनुभूति को लयात्मक अभिव्यक्ति देने की कोशिश की है । उन्होंने अपनी कविताओं को अंतर की आकुलता और वेदना की आर्द्रता से सिंचित किया है । आत्मनिष्ठता और भावना की कसौटी पर ये गीतिकाव्य के श्रेष्ठ नमूने हैं ।

निम्न लिखित कविता -

''सपनों में कोई आती है ।
वसुन्धरा के रूप-रंग हर
अन्धकार जब छा जाता है,
जब रजनी के बाहु-वलय में
विपुल विश्व भी खो जाता है,
तब छिपकर मेरी पलकों में
कोई रूपसि घुस आती है ।
ज्योत्स्ना के जब महासिंधु में
मेघ-तिमिंगल विचरण करते,
उन से डरकर नखत-मीन जब
सिंधु-गर्भ में छिप रह जाते,
क्षीर-पयोनिधि की लहरों से
तब कोई ऊर्वशि आती है ।
स्वर्गंगा के पुलिनों पर जब
खो जाती सुधबुध अप्सरियाँ
नन्दन-वन के पुष्प-कुंज में
सो जाती जब दिवि की परियाँ
चुपके-से उठ स्वप्न-जगत में
तब कोई अप्सरि आती है ।''

कवि ने इन पंक्तियों में विभिन्न प्राकृतिक अंगों में नारी-मूर्तियों की कल्पना की है । सुंदर प्राकृतिक बिम्बों के माध्यम से वे प्रेयसी के प्रकट होने का अभिवर्णन करने में अपनी कुशलता का परिचय देते हैं । कवि यह अद्‌भुत कल्पना करते हैं कि जब वसुंधरा के रूप-रंग को हरकर अंधकार छा जाता है और जब रजनी के बाहु-वलय में संपूर्ण विश्व भी खो जाता है, तब उसकी पलकों में कोई रूपसी घुस आती है । महासिंधु में विहार करनेवाले ज्योत्स्ना के मेघ-तिमिंगलों से डरकर नक्षत्र रूपी मीन जब सिंधु-गर्भ में छिप रह जाते हैं तब क्षीर-पयोनिधि की लहरों से कोई ऊर्वशी आती है । इसी प्रकार नंदन वन के पुष्प-कुंज में दिवि की परियाँ सों जातीं तब चुपके-से उठकर कोई अप्सरि उसके सपनों में आती है ।

छायावादी कवियों की समकक्ष प्रतिभा रखने वाले कवि आदेश्वर राव की कल्पना-तुरंग बड़ी कुदानें लेती है । वे आलम्बनगत रूप में प्रकृति का मनोहर वर्णन कर अपने प्रेमातुर मन की भावनाओं को सुंदर अभिव्यक्ति देते हैं । वास्तव में छायावादी कवियों में आग्रगण्य कवि बाबा जयशंकर प्रसाद जी का ज्यादा प्रभाव गुरूवर आदेश्वर राव जी पर पडा हुआ है । इसलिये उन्होंने प्रसाद जी का ' हिमाद्रि से ' शीर्षक सामाजिक उद्‌बोधनात्मक गीत का अनुकरण किया है। राव जी ने प्रसाद जी का अनुसरण करते हुये पंचचामर वृत्त में एक प्रेम कविता लिखी है। प्रसाद जी की कविता -

'' हिमाद्रि तुंग श्रृंग से,
प्रबुध्द शुध्द भारती -
स्वयंप्रभा समुज्वला
स्वतंत्रता पुकारती -
अमर्त्य वीर-पुत्र हो, दुढ-प्रतिज्ञ सोच लो,
प्रशस्त पुण्य पन्थ है, बढे चलो, बढे चलो ।
असंख्य कीर्ति-रश्मियाँ,

विकीर्ण दिव्य दाह-सी
सपूत मातृभूमि के -
रूको न शूर साहसी ।
अराति सैन्य सिन्धु में सुवाडवाग्नि से जलो ।
प्रवीर हो जयी बनो-बढे चलो, बढे चलो । ''

गुरूजी ने प्राकृतिक प्रतीकों के माध्यम से प्रेम के विराट स्वरूप का अंकन ''प्रेम'' कविता व्दारा व्यक्त किया। सौन्दर्योपासक कवि आदेश्वर राव जी ने उद्दीपन के रूप में प्रकृति का अंकन अपनी कविताओं में करते हुए प्रेयसी के प्रति अपने आकर्षण को कई रूपों में प्रकट किया है । पंच चामर वृत्त में लिखे गये ''प्रेम'' गीत में कवि ने कई प्राकृतिक प्रतीकों का आश्रय लेकर प्रेम-कोश में निक्षिप्त अपार विश्व संपदा की ओर पाठकों के ध्यान को आकृष्ट किया है । उन्होंने सुप्रेम को एक दिव्य शक्ति के रूप में मानते हुए उसे सृष्टि के श्रृंगार के रूप में अभिवर्णित किया और अधीर मातृ-वक्ष से प्रसूत दुग्ध धार के रूप में उसे पवित्र माना है । एक अतृप्त चाह के रूप में प्रत्येक व्यक्ति के प्राणों में संचरित होनेवाली प्रेम-भावना की विशिष्टता को प्राकृतिक प्रतीकों के माध्यम से कवि ने प्रतिपादित किया है । संयोग और वियोग की स्थितियों में प्रेम के विराट स्वरूप का अंकन करते हुए वे लिखते हैं -

'' विशाल सिंधु-गर्भ में प्रसुप्त प्रेम-दाह हे
प्रत्येक व्यक्ति-प्राण में अतृप्त एक चाह है
सुप्रेम एक दिव्य शक्ति सृष्टि का शृंगार है
अधीर मातृ वक्ष से प्रसूत दुग्ध-धार है ।

असंख्य कोटि सिध्दयाँ निबध्द प्रेम-पाश में
अपार विश्व सम्पदा निक्षिप्त प्रेम-कोश में
नक्षत्र माल दीपती सुदूर शून्य-सिन्धु में
अमूल्य रत्न-रोचियाँ प्रदीप्त प्रेम-सिन्धु में ।

अनंग-भाव फैलता विभिन्न रूप धार के
विराग छोड भागते अनेक मौनि हार के
अनन्त ज्ञान भक्ति मुक्ति बध्द प्रेम सूत्र से
अनादि ब्रह्म विष्णु रूद्र बध्द प्रेम-गात्र से ।

अशाँत क्लांत दीन हेतु प्रेम रत्न-हार है
विरोधग्रस्त विश्व हेतु प्रेम सृष्टि-सार है
निदाघ-तप्त प्राणि हेतु प्रेम नदी-कूल है
महेश-लीन भक्त प्रेम धर्म-मूल है । ''

आदेश्वर राव जी के काव्य का प्रेरणा श्रोत मुख्यतः प्रकृति ही रही । प्रकृति के अनंत सौन्दर्य के परम् पुजारी आदेश्वर राव ने अपनी कविताओं में संयोगात्मक एवं वियोगात्मक स्थिति में प्रेमानुभूतियों को व्यक्त करने कई प्राकृतिक प्रतीकों व बिम्बों का आश्रय लिया है ।

सृष्टि के विकास में योग देनेवाली अत्यंत सहज एवं बलवती प्रकृति प्रेम-भावना है । समस्त कलाओं में इसकी अभिव्यक्ति सर्वाधिक रूप से पाई जाती है । आचार्य पी. आदेश्वर राव जी की कविताओं में प्रेमानुभूतियों की तीव्र अभिव्यंजना हुई है । जग-जीवन में प्रेम एवं सौन्दर्य को स्थापित करना ही कवि का अभीष्ट है । कवि की प्रेम-भावना प्रधानतः सौन्दर्यमूलक है । नारी व प्रकृति के प्रति आकर्षण को व्यक्त करने के संदर्भ मं कवि की प्रेमानुभूतियों में विविधता पाई जाती है और विवेच्य कविताओं में प्रेम-भावना की अभिव्यक्ति मर्मस्पर्शी बन पडी है । कवि ने अपनी कविताओं में नारी-जीवन के सुंदर-कोमल, पवित्र आदि रमणीय पक्षों का अंकन किया है । ''अंतराल'', ''धार के आर-पार'' और ''वातायन ये प्रेम-सौध के'' काव्यों में राव जी ने नारी के प्रति अपने आकर्षण को व्यक्त करते हुए नायिका के संस्कारशील सौन्दर्य का सार्मिक अंकन किया है ।

इस प्रकार विवेच्य कविताओं में प्रेम की विमलधारा के रूप में नायिका अभिवर्णित है । कवि की प्रत्येक कविता में नायिका के स्नेहसिक्त अनुराग को पाने की कामना प्रबल रूप में व्यक्त होती है । नायिका के आत्मिक सौंदर्य का वर्णन करने में बेजोड रहे हैं । इसीलिए हमारे गुरूवर आदेश्वर राव जी सौंदर्योपासक, प्रेमाकुल कवि के रूप में विराजमान हो रहे हैं । वे धन्य हुँ उनका जीवन अजरामर है । मैं भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि वे दीर्घायु रहे ।

* * *